

मानवीय मूल्यों के आत्मसातीकरण में परिवार की भूमिका -

परिवार ही प्राथमिक इकाई है जहां व्यक्ति का समाजीकरण होता है। बच्चे के व्यक्तित्व के निस में परिवार की अहम् भूमिका होती है। परिवार ही बालक को समाज का एक योग्य सदस्य बनाता है। परिवार उसे आचरण संबंधी नियमों से परिचित कराता है। परिवार में बालक के अनेक मानवीय मूल्यों का विकास होता है। वह प्रेम, आत्म-त्याग, परोपकार, कर्तव्य और आज्ञापालन तथा सहयोग का पाठ सीखता है। कई अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चका है कि जिन परिवारों में सदस्यों के बीच स्वस्थ संबंध रहते हैं, ज्यादातर उसी परिवारों के बच्चे सफलता और बड़ी-बड़ी उपलब्धियां कायम करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक संगठित परिवार ही अपने सदस्यों को मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है तथा जीवन में महान कार्य करने की असीम प्रेरणा भी देता है। परिवार के द्वारा दी गई मनोवैज्ञानिक सुरक्षा में ही बालक का मानसिक और बौद्धिक विकास हो जाता है जिससे बालक यह समझने लगता है कि व्यक्ति और समाज के प्रति उसका व्यवहार कैसा होना चाहिए।

मूल्यों के आत्मसातीकरण में समाज की भूमिका -

प्रशासन से संबंधित नैतिक मूल्य व मानक उस समाज में प्रचलित सामान्य नैतिक मूल्यों व मानकों का ही एक रूप है, अर्थात् किसी समाज अथवा समुदाय एवं वहां के अभिशासकों के नैतिक मूल्यों व आदर्शों में फर्क नहीं किया जा सकता। समाज शब्द का प्रयोग बहुधा व्यक्तियों के एक ऐसे समूहों या सामाजिक साहचर्य के एक ऐसे रूप के लिए किया जाता है जिसके सदस्य एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं और जिनमें एकत्व की भावना, अन्तपारिस्परिकता, साझा संस्कृति तथा संगठित क्रियाकलापों जैसी विशेषताएँ होती हैं। फाइनर के शब्दों में, “सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह पाया जा सकता है कि किसी संस्था, संगठन या व्यवसाय से जुड़े नैतिक मापदंड उस देश में प्रचलित नैतिक मानकों व मूल्यों से कम या ज्यादा नहीं होता बल्कि उसी के अनुरूप होता है जिस देश में ये संस्था, संगठन या व्यवसाय संचालित रहते हैं, अर्थात् किसी संगठन या व्यवसाय के लिए तय किए नैतिक मूल्यों पर वहां की सभ्यता व बाह्य परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

किसी देश की सरकार की सफलता वहां के नागरिकों को जागरूकता एवं शासन में उनकी भागीदारी पर निर्भर करती है। यही कारण है कि नागरिकशास्त्र की सभी पुस्तकों में देश को प्रगति में वहां की जनचेतना की भूमिका को सबसे अहम बताया जाता है। जनचेतना एवं जागरूकता के माध्यम से देश की प्रगति तभी संभव है जब वहां की शिक्षा व्यवस्था तथा मीडिया नागरिकों के चरित्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का सही तरीके से निर्वाह करे। किसी देश में नागरिकों के चरित्र ही वह स्रोत है जिनसे देश के विकास व आधुनिकीकरण को ऊर्जा मिलती है।

ऐसे में शिक्षा, वयस्क शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से लोगों में देश प्रेम, अनुशासन व नागरिक चेतना प्रदान करने की परजोर आवश्यकता है। इससे लोक सेवकों को सभी समुदायों के लोगों का सहयोग मिल सकेगा तथा शासन में जनभागीदारी बढ़ेगी। ऐसे में लोक सेवक भी कठिन पारश्रम के लिए उद्यत होंगे ताकि जनता का समग्र विकास सनिश्चित हो।

मूल्यों के आत्मसातीकरण में शिक्षण संस्थानों की भूमिका -

नैतिक मूल्यों के आदान-प्रदान में शिक्षा का की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा व्यक्ति को इस बात के लिये तैयार करती है कि वह सामाजिक परिवर्तन को नेतृत्व प्रदान करे । शिक्षा व्यक्ति में अनुकूलनकारी व्यक्तित्व का विकास करके परिवर्तन की प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करती है। यह नवीन मूल्यों एवं विचारों के आत्मसातीकरण में सहायक होती है और व्यक्ति को किसी विशिष्ट दिशा में परिवर्तन हेतु बौद्धिक एवं भावनात्मक रूप से तैयार करती है। शिक्षा समाज एवं संस्कृति की निरन्तरता के साथ-साथ उसमें वांछित सुधार एवं परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।



अनुकलनकारी व्यक्तित्व का विकास करके परिवर्तन की प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करती है। यह नवीन मूल्यों एवं विचारों के आत्मसातीकरण में सहायक होती है और व्यक्ति को किसी विशिष्ट दिशा में परिवर्तन हेतु बौद्धिक एवं भावनात्मक रूप से तैयार करती है। शिक्षा समाज एवं संस्कृति की निरन्तरता के साथ-साथ उसमें वांछित सुधार एवं परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

परन्तु इसके लिए शिक्षा-व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे प्रशिक्षु की स्वायत्तता व स्वतंत्रता बाधित न हो। किसी व्यक्ति के शैक्षणिक विकास के कई उद्देश्य हो सकते हैं जिनमें प्रमुख हैं- ज्ञानार्जन, संस्कृति-संरक्षण, व्यक्तित्व का विकास, सामाजिक न्याय की प्रगति, वैज्ञानिक मनोदशा का विकास, लोकतंत्र की सफलता तथा धर्मनिरपेक्ष मनोवृत्ति का विकास आदि। ये गुणात्मक रूप से उच्चतर एवं बेहतर जीवन की प्राप्ति में सहायक होते हैं। यह शिक्षा ही है जिसके माध्यम से समाज उच्च मानवीय मूल्यों का संरक्षण करती है और साथ में उन्हें प्रोत्साहन भी देती है।